

'सच्ची अरदास'



ऐ मेरे वाहेगुरु

ज़िन्दगी बरख़्शी है, तो जीने का **सलीका** भी बरख़्श

ज़ुबान बरख़्शी है मेरे मालिक, तो सच्चे **अल्फ़ाज़** भी बरख़्श

सभी के अन्दर तेरी **ज्योत** दिखे, ऐसी तू मुझे **नज़र** भी बरख़्श

किसी का दिल न **दुखे** मेरी वजह से, ऐसा **अहसास** भी तू मुझे बरख़्श

आपके **चरणकमल** में मैं लगा रहूँ, हे दाता ऐसा **ध्यान** भी बरख़्श

रिश्ते जो बनाये मेरे मालिक, उनमें अटूट **प्यार** तू भर

ज़िम्मेदारियाँ बरख़्शी हैं मेरे पालनहार, तो उनको निभाने की **समझ** भी बरख़्श

बुद्धि बरख़्शी है मेरे मालिक, तो **विवेक** बरख़्श कर एक और अहसान कर दे

जो **कुछ** है वो सब तेरा है, तो फिर इस मेरी "मैं" को भी बरख़्श



Beautiful life